प्रोमिनेंस नवाचार

अंक 4 | 1 अगस्त से 31 अगस्त 2025

संवाद क्लब नवाचार के रंग में

जीवन कौशल के साथ सशक्त भविष्य की ओर

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा–ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

नवाचार पत्रिका हिंदी विभाग के साथ अगस्त अंक :2025
नवाचार वही है, जहाँ कल्पनाएँ उड़ान भरती हैं और सपने हकीकत बनते हैं।''

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल की ''नवाचार पत्रिका'' में आपका हार्दिक स्वागत है। यह पत्रिका हमारे नन्हे–मुन्ने सितारो की रचनात्मक सोच, प्रतिभा, और नवीन विचारों का अनोखा संग्रह है। यह सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की मेहनत, सीख, और सपनों की रंगीन तस्वीर है।
यहाँ हर पन्ना एक कहानी कहता है।

कहीं ज्ञान की झलक, कहीं कला की चमक, कहीं, विज्ञान की उड़ान, तो कहीं भावनाओं की गहराई। इस मंच के माध्यम से हम बच्चों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें अपने सपनों को आकार देने का अवसर प्रदान करते हैं। ''जहाँ ज्ञान और कल्पना का संगम होता है, वहीं से शुरु होता है सच्चा नवाचार''

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल की ओर से संदेश प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों और पाठकों, हमारे लिए गर्व की बात है कि हम आपको ''नवाचार पत्रिका'' का यह विशेष अंक प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मकता, मेहनत, सोच, सपनों और उपलब्धियों का एक शानदार संगम है।

''शांति सिर्फ शब्द नहीं, एक अनुभव है ''

हमारे नन्हे छात्रों ने इसे अपने छोटे–छोटे हाथों से महसूस किया शांति उद्यान गतिविधि से माध्यम से। बच्चों ने प्राकृतिक जुड़ाव और आंतरिक शांति का अनुभव किया''

नवाचार के रंग

यह गतिविधि केवल एक कार्यक्रम नहीं थी, यह एक भावना थी। एक ऐसी भावना, जो बच्चों के कोमल मन में स्थायी छाप छोड़ गई। नवाचार का यही उद्देश्य है – हर गतिविधि में मन का विकास, संवेदनशीलता का विस्तार, और शांति की स्थापना होती है। सामाजिक–भावनात्मक कौशल को प्रारंभिक अवस्था में ही विकसित किया जाता है। ज्ञान के दीपक प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में बच्चों ने छोटे पौधे लगाए, मिट्टी को छुआ और हरियाली के बीच बैठकर मौन और ध्यान का अभ्यास किया। शिक्षकगणों ने बच्चों को बताया कि पेड़–पौधे हमारे सच्चे मित्र हैं – ये न केवल हमें ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि मन को भी शांत रखते हैं। बच्चों ने रंग–बिरंगे पत्थरों पर 'शांति वृक्ष'' भी लगाया जो भविष्य में विद्यालय में शांति और सौहार्द का प्रतीक बनेगा। बच्चों में प्रकृति प्रेम, धैर्य और शांत चित विकसित करना सामाजिक–भावनात्मक कौशल को प्रोत्साहित करना यही इस गतिविध का उद्देश्य है। 21वीं सदी की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।

बच्चों का झरोखा

1. बीज बोए, शांति बोईः
बच्चों ने मिट्टी को छूकर उनमें पौधे लगाए, मानो वे कह रहे हों–

''हम हरियाली के रक्षक हैं, हम शांतिप्रिय हैं।''

2. चुप्पी में संवादः
एक छोटे से वृक्ष के नीचे सभी बच्चे मौन में बैंठे। कोई चिड़िया की आवाज सुन रहा था, कोई पत्तों की सरसराहट। यह मौन साधना बच्चों को अपने अंदर झाँकने का अवसर दे रही थी।

3. 'शब्द–पत्थर सजाए गएः
बच्चों ने छोटे रंगीन पत्थरों पर शब्द लिखे–शांति, प्रेम, करूणा मित्रता, और उन्हें शांति उद्यान में सजाया। हर शब्द जैसे एक संकल्प बन गया।

''जब शब्द कानों से दिल तक पहुँचे''

कक्षा 1 जीवन कौशल सत्र।
नवाचार की प्रस्तुति

'बोलना केवल आवाज़ नहीं, भावनाओं का सेतु है और सुनना, केवल कानों से नही – दिल से होना चाहिए।''

–नवाचार शिक्षा शैली का सार
जीवन कौशल केवल किताबों से नहीं सीखें जाते, बल्कि अनुभवों से उपजते हैं।
नवाचार के रंग में संचारः

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल मे केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि मूल्य आधारित शिक्षा को हद्य तक पहुंचने का कार्य गतिविधि के द्वारा किया गया । इस गतिविधि में कक्षा (1) के छात्रों ने बड़ी मनमोहकता के साथ भाग लिया।

छात्रों ने अपने मनमोहन अभिव्यक्ति को बड़े अलग ही, संवेदनशील, सुंदर, रचनात्मक भाव से व्यक्त किया।

बच्चों का दर्पण

मैंने तो अच्छे से बोला था, पर अगला दोस्त हँसने लगा–आरव
''मुझे लगा मम्मी ने कहा, पर वो तो दोस्त था!'' समीरा

यही छात्रों की कहानी है।
''सुनो ध्यान से , बोलो सच्चाई से
जब संवाद में ध्यान जुड़ता है, तब रिश्ते में गहराई आती है।''
–नवचार की नींव

जीवन कौशल के साथ सशक्त भविष्य की ओर

प्रकृति के जुड़ाव का उत्सव
लीफ हार्मनी रिपोट – कक्षा प्रथम, द्वितीय
लीफ हार्मनी रिपोर्ट

''प्रकृति की सबसे सरल भाषा – एक हरी पत्तियों की मुस्कान।''
बिना बोले भी पत्तियाँ हमे प्रकृति से जोड़ देती हैं।
जो हमें परिवर्तन की दहलीज पर कदम रखने को कहती है
''हर पत्ता प्रकृति का एक गीत है – मौन, मधुर और सजीव है

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल – प्रकृति से एक कदम और नज़दीक

प्राकृतिक सौंदर्य से जुड़ाव को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में हाल में एक अनोखी और रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए पत्तियों का उपेयाग करके सुंदर ओर अनोखे डिज़ाइन बनाए। लीफ हार्मनी'' गतिविधि ने छात्रों का रचनात्मकता और कल्पना के नए आयामों से परिचित कराया। इस गतिविधि ने छात्रों को प्रकृति के साथ जुड़ने और अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने का एक अद्भुत अवसर प्रदान किया। इस प्रकार की गतिविधियां नवाचार के रंग मे मिलकर अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता को निरंतर नया आयाम देगी।

इस गतिविधि का उद्देश्य था – बच्चों मे पेड़ों और पत्तियों के प्रति प्रेम और जागरुकता विकसित करना।

प्राकृतिक के इस रंग को हमारे छोटे–छोटे नन्हे मुन्ने बाल कलाकार के द्वारा पूर्णता दी गई।

बच्चों ने अपने घर या स्कूल के आसपास से अलग–अलग प्रकार की सूखी पत्तियाँ एकत्र कीं। हरे रंग की चार्ट पेपर, मछली, गुब्बारे आदि के द्वारा अपने अंतर्मन की क्रियात्मक क्षमता को उजागर किया

शिक्षिकाओं ने बच्चों को पत्तियों की आकृति, रंग और बनावट के बारे में सरल शब्दों में बता कर उनका मार्गदर्शन किया।

बाल कलाकार की प्रतिभा तब देखते ही बनी जब उन्होंने पत्तियों से बनी तितली, मछली और फूल आदि में अपनी रचनात्मकता दिखाई।

पत्तियों की छपाई से बच्चों ने सुंदर आर्टवर्क (कलाकार्य) तैयार किए।
एक ''ग्रीन ट्री सॉन्ग'' पर बच्चों ने समूह में गीत गाया और नृत्य किया। बच्चों ने इस प्रकार से जीवन कौशल के साथ–साथ एक सुनहरे भविष्य की ओर अपने नन्हे–नन्हे कदमों को रखा।

मेरा शांत कोना'' – जब बच्चों ने सुकून को रंगों में सजाया

कक्षा – 2 । जीवन कौशल सत्र
नवाचार की प्रस्तुति
प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल नवाचार पत्रिका के माध्यम से संवेदनशील रंगों में रंगा एक अभिव्यक्ति
जीवन कौशल को अपने भाव में उजागर करता है
जिसमें ऐसे ही छोटे–छोटे अनुभव बच्चों को
बड़े जीवन का पाठ सिखाते हैं।

''शांति बाहर नहीं, अपने भीतर खोजनी होती है।''
''शांति कोई स्थान नहीं, एक अनुभूति है – जहाँ मन मुस्कुराना है और आत्मा ठहर जाती है।''

हमारे इस उगते सूरज में बच्चों को केवल पढ़ाना नहीं, आता उन्हें महसूस करना भी सिखाते हैं। अपनी दृष्टि को अपने भाव को अभिव्यक्ति को उजागर करना भी बताते हैं। कक्षा 2 के जीवन कौशल सत्र में बच्चों ने एक अनोखा विषय जाना–Calmness यानी 'शांति' क्या होती है?

''खुश रहना, चुपचाप सुकून से बैठना, बिना शोर के खुद से जुड़ना''

''मन में अगर सुकून हो, तो पूरी दुनिया शांत लगती है।''
प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल का जीवन दर्शन

नवाचार की झलकियाँः
हमारे इस गुरुकुल में ऐसे ही छोटे–छोटे अनुभव बच्चों को बड़े जीवन पाठ सिखाते हैं। जो हमें अनुभव और जीवन कौशल से प्रदान होती है।

शुभकामना के साथ, नवाचार के रंग में
''शांति बाहर नहीं, अपने भीतर खोजनी होती है।''

आंतरिक शिक्षक मूल्यांकन

शिक्षण गुणवत्ता की ओर एक प्रतिबद्ध दृष्टिकोण प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल

''शिक्षक की दृष्टि, नवाचार की दिशा''

''नवाचार कोई तकनीक नहीं, यह सोचने का तरीका है – और शिक्षक उस सोच के प्रथम सूत्रधार हैं।''

प्रॉमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में शिक्षा केवल छात्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षकों के निरंतर विकास और मूल्यांकन को भी उतनी ही गंभीरता से लिया जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में आंतरिक शिक्षक मूल्यांकन **(Internal Teacher Assessment)** की प्रक्रिया अपनाई गई है, जो शिक्षकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन पद्धतियों और विद्यार्थियों के साथ उनकी सहभागिता का समय आंकलन करती है।

इस मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को सजग, आत्म–विश्लेषी बनाना है ताकि वे विद्यार्थियों को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षित कर सकें।

मूल्यांकन के प्रमुख बिंदु : शिक्षण की प्रभावशीलता, पाठ योजना की स्पष्टता, कक्षा में बच्चों की भागीदारी, **ICT** व नवाचार का उपयोग, मूल्य आधारित शिक्षण मूल्यांकन के तरीके

प्रत्येक शिक्षक को संवादात्मक फीडबैक दिया गया, ताकि वे अपने कार्य में सुधार करते हुए उच्च शैक्षिक मानकों की ओर अग्रसर हो सकें।

जहां शिक्षक सोचते हैं अलग, वहीं शुरू होता है नवाचार

इस पहल के उद्देश्य : गुणवत्ता आधारित शिक्षण को प्रोत्साहन देना शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को दिशा देना और सुधार को प्रोत्साहित करना है।

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में यह आंतरिक शिक्षक मूल्यांकन प्रक्रिया केवल एक औपचारिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह निरंतर सुधार, नवाचार और गुणवत्ता की संस्कृति को पोषित करने का एक सशक्त प्रयास है। यह पहल विद्यालय को एक ''नवाचार केंद्रित शिक्षण संस्थान'' के रूप में और भी सुदृढ़ बनाती है।

''शिक्षक : नवाचार के प्रथम प्रेरक''

''मिट्टी के रंग, संस्कृति के संग,

संस्कार तब गहराते हैं जब शिक्षा मिट्टी से होकर मन तक पहुँचती है।''

''जब बच्चा दीया बनाता है, तो वह केवल कला नहीं, बल्कि उम्मीद को आकार देती है।''

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में केवल शैक्षणिक ज्ञान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति परंपराओं और रचनात्मकता को भी उतनी ही प्राथमिकता दी जाती है। इसी सोच के तहत कक्षा प्राथमिक शिक्षा से 8 के विधार्थियों के लिए एक सुंदर और अर्थपूर्ण गतिविधि का आयोजन किया गया–दीया व गणिपति शिल्प कला, जिसमें बच्चों ने मिट्टी के द्वारा अपने हाथों से दीपक और गणपति प्रतिमाएँ बनाई।

गणपति शिल्प – श्रद्धा और सृजन का संगम

बच्चों ने मिट्टी से भगवान गणेश की सुंदर प्रतिमाएं बनाई। इस दौरान उन्होंने सीखा कि गणेश जी विध्नहर्ता हैं, जो ज्ञान, शुभारंभ और बाधाओं को दूर करने के प्रतीक माने जाते हैं।

''गणपति की मूर्ति में केवल आस्था नहीं, बच्चों की कल्पनाशक्ति और संस्कार भी झलकते हैं।''

यह गतिविधि विद्यार्थियों को भारतीय त्योहारों की महत्ता, मिट्टी के महत्व, हस्तशिल्प कला ओर सृजनात्मक अभिव्यक्ति से जोड़ने के लिए आयोजित की गई थी। गणेश चतुर्थी के पावन अवसर को ध्यान में रखते हुए बच्चों का सह सीखने का अवसर मिला कि कैसे पारंपरिक कारीगरी को अपने हाथों से जीवंत किया जा सकता है।

''गणपति का आकार चाहे छोटा हो, लेकिन उसमें बच्चों की आस्था और कल्पना का आकार बहुत बड़ा होता है।''

शिक्षा के साथ संस्कार

इस गतिविधि ने बच्चों के भीतर धैर्य एकाग्रता, रचनात्मकता और टीम वर्क जैसे गुणों को भी निखार। उन्होंने मिट्टी को महसूस किया, उसे आकार दिया और महसूस किया कि प्रकृति से जुड़ाव कितना महत्वपूर्ण है।

''मिट्टी में खेलना बच्चों का स्वभाव है, पर जब वे उससे सृजन करते हैं, तो वह संस्कार बन जाता हैं

''नन्हे नन्हे कदम, भारत के प्रतीकों की ओर'' रिपोर्ट

नन्हे हाथों से जब राष्ट्रीय प्रतीक रंगे जाते हैं, तो भविष्य सजा हुआ दिखाई देता है।''

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल के प्री–प्राइमरी विभाग में बच्चों के लिए एक विशेष 'राष्ट्रीय प्रतीक गतिविधि' का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य था – बचपन से ही बच्चों को अपने देश की पहचान से जोड़ना और उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित करना।

बच्चों ने बड़े उत्साह और जिज्ञासा के साथ भारत के प्रमुख राष्ट्रीय प्रतीकों जैसे: मोर आदि के विषय को जाना।

स्मरणीय पल' गतिविधि के दौरान बच्चों के चेहरों पर दिखती मुस्मकान, कौतूहल और गर्व, यह स्पष्ट कर रहा था कि शिक्षा जब अनुभवात्मक और भावनात्मक होती है, तो उसका प्रभाव कहीं अधिक गहरा होता है।

''देशभक्ति केवल झंडा लहराने मे नहीं, उसे पहचानने और समझने में भी होती है – और यही हमने अपने नन्हे छात्रों को सिखाया।''

शिक्षा की इस नवीनतम् प्ररेणा मे हमारा प्रयास है कि शिक्षा के हर पड़ाव पर बच्चों को अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने मूल्यों से जोड़ा जाए, ताकि वे न केवल अच्छे विद्यार्थि बनें, बल्कि सजग नागरिक भी बनें।

हर प्रतीक में छिपा है भारत का गर्व, और हर बच्चे की मुस्कान में बसता है उसका भविष्य।''

सिर्फ ज्ञान नहीं, जीवन जीने की कला भी आवश्यक है। इसी सोच के साथ प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में विद्यायार्थियों के लिए जीवन कौशल (Life skilss) और सामाजिक–भावनात्मक विकास (Socio-Emotional Learning) पर आधारित कई गतिविधियाँ कराई गई। इनका उदेश्य छात्रों में आत्म जागरूकता, सहानुभूति, टीमवर्क, भावनाओं की पहचान और प्रबधंन जैसे महत्वपूर्ण गुणों का विकास करना रहा।

''सच्ची शिक्षा वह है, जो मसतिष्क को ही नहीं, हदय को भी शिक्षित करे।''
प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को उनकी उम्र के अनुरूप जीवन कौशल (Life skilss) एवं सामाजिक–भावनात्मक विकास (Socio-Emotional Learning) से जुड़ी गतिविधियों से जोड़ा गया, जिससे वे अपने भावों को पहचानें, दूसरों की भावनाओं को समझें, और जीवन को संतुलन व आत्मविश्वास के साथ जीना सीखें।

शिक्षा का अर्थ है – जीवन के लिए तैयारी, केवल परीक्षा के लिए नहीं।''

कक्षा 1–2 : भावनाओं की पहचान और आत्म–जागरूकता

नन्हे बच्चों के साथ 'आज मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ?' 'चेहरे से भावना पहचानों, और भावनाओं का रंग जैसी गतिविधियाँ कराई गई।
बच्चों ने सीखा कि खुश होना, दुखी होना, गुस्सा या घबराना – ये सभी भावनाएँ सामान्य हैं, लेकिन उन्हें पहचानना और उनके बारे में बात करना बहुत ज़रूरी है।
'जब बच्चा अपनी भावना को शब्द देता है, तो वह डर से नहीं, समझदारी से काम लेना सीखता है''।

कक्षा 3–4 : सहानभूति और सहयोग
इस उम्र के बच्चों को टीम वर्क, दोस्ती, और दूसरों की ममद करने जैसी सामाजिक क्षमताओं पर काम कराया गया।
'मैं तुम्हारी जगह होता तो...? जैसी भूमिका आधारित गतिविधियों, दोस्ती के नियम, और समूह कार्य के ज़रिए बच्चों ने सीखा कि सुनना और समझना, एक इंसान बनने की दिशा में पहला कदम हैं

''सहानुभूति सिखाई नहीं जाती, बल्कि अनुभवों से उभरती है – और यही अनुभव स्कूल देता है।''

हमारा उद्देश्य :– हमारा उद्देश्य है कि बच्चे अच्छे नंबरों के साथ–साथ अच्छे इंसान भी बनें – जो भावनात्मक रूप से मज़बूत, सामाजिक रूप से सजग और व्यवहार में सहदय हों।
जीवन कौशल गतिविधियाँ दस दिशा में एक सुंदर और सशक्त पहल हैं।

''शिक्षा तब पूर्ण होती है जब वह बच्चे के मन, मस्तिष्क और भावनाओं –तीनों को छू जाए।''

श्रीकृष्णा जन्माष्टमी

जन्माष्टमी उत्सव – प्रभु श्रीकृष्ण के रंग में रंग प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल
नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की'' प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव रिपोर्ट

कन्हैया की मुस्कान में जीवन की हर थकान मिट जाती है।''
प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में इस वर्ष जन्माष्टमी का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा–2 तक के नन्हें–मुन्ने बच्चों ने इस विशेष अवसर पर मनमोहक प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। बच्चों के रंग–बिरंगे परिधानों, कान्हा–राधा के रूप में सजे स्वरुप और मधुर मुस्कानों ने पूरे वातावरण को भक्ति और उल्लास से भर दिया।

संस्कार और संस्कृति का संगम ही शिक्षा की सच्ची पहचान है।''
कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए प्री–प्राइमरी से लेकर कक्षा 2 तक के विद्यायार्थियों ने भी अपनी–अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। गीत, नृत्य, नाटिका ओर श्री कृष्णा – पूतना की अनोखी अभिव्यक्ति के साथ महाभारत के वचन जैसे कार्यक्रमों ने समारोह मे चार चांद लगा दिए। छोटे–छोटे कृष्ण और राधाओं की झांकियां देखते ही बनती थीं। बच्चों के मनमोहक नृत्य और लीलाओं ने उपस्थित अभिभावकों एवं शिक्षकों को भक्ति रस मे सराबोर कर दिया।

इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक 'माननीय मणि सर 'एवं 'प्रचार्य महोदया' से सभी विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया।

उन्होंने कहा–
''श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि बुद्धि, साहस और करूणा के साथ हर परिस्थिति का सामना किया जा सकता है।''

''भक्ति में शक्ति है, और शक्ति में जीवन का सच्चा आनंद।''

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल स्वतंत्रता दिवस की रिपोर्ट

''स्वतंत्रता का अर्थ केवल बंधनों से मुक्ति नहीं, बल्कि अपने देश को उँचाइयों तक ले जाने का संकल्प है।
हर वर्ष 15 अगस्त का दिन हमें गर्व, सम्मान और कृतज्ञता से भर देता है। यह वह दिन है जब हमारा देश वर्षो की दासता से मुक्त होकर स्वतंत्रता की खुली हवा में सांस लेने लगा। 15 अगस्त 1947 को हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों के अदस्य साहस, बलिदान और दृढ़ संकल्प के कारण हमें आज़ादी मिली है।

इस वर्ष प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन बड़े हर्ष और उल्लास के साथ किया गया। विद्यालय परिसर तिरंगे की आभा से सजा, और बच्चे केसरिया, सफेद और हरे परिधानों में देशभक्ति का संदेश दे रहे थे।

''तिरंगा सिर्फ एक झंडा नहीं, यह 140 करोड़ भारतीयों की आत्मा है।''
कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथियों के स्वागत से हुई। विद्यालय के निदेशक माननीय मनी सर और प्राचार्या मैम ने ध्वजारोहरण कर सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकमनाएँ दीं। ध्वजारोहरण के बाद पूरे विद्यालय में राष्ट्रगान की गूंज फैल गई।

''देशभक्ति कोई भावना नही, बल्कि यह एक जीवन शैली है।''

इसके बाद विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों, नृत्यों और भाषणों के माध्यम से भारत के गौरवशाली इतिहास और स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को जीवंत कर दिया। 3 से ग्रेड 8 तक के बच्चों की प्रस्तुतियों ने सबका दिल जीत लिया।

''अगर आपका खून देश के लिए नहीं खौलता, तो वह खून नहीं पानी हैं।''

प्रधानाचार्य जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज़ादी की रक्षा तभी संभव है जब हम अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठा और ईमानदारी से करें। उन्होंने बच्चों को प्रेरित किया कि वे शिक्षा, खेल के और जीवन के हर क्षेत्र के उत्कृष्टता हासिल करें और भारत का नाम रोशन करें।

कार्यक्रम का समापन 'वदें मातरम्' के साथ हुआ। हर चेहरे पर तिरंगे की चमक और दिल में देश की सेवा का संकल्प था।

''स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाता है कि सिर्फ़ स्वतंत्र नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी हैं।''
जय हिंद, जय भारत

हमारी मुद्रा को जानें
(Know Our Currency)

''सीखना तक सार्थक होता है, जब वह जीवन को सरल और समझदार बना दें।''

रिपोर्ट'
18 अगस्त 2025 को एल.के जी मैरीगोल्ड्स के नन्हे'–मुन्ने बच्चों के लिए ''हमारी मुद्रा को जानें विषय पर एक रोचक और ज्ञानवर्धक गतिविधि का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों को भारतीय मुद्रा के नोटों और सिक्कों की पहचान कराना तथा उनके महत्व से परिचित कराना था।

''ज्ञान वह मुद्रा है, जो जितना बाँटो उतनी बढ़ती हैं।''

शिक्षिकाओं ने बच्चों को विभिन्न नोटों और सिक्कों की जानकारी दी और उन्हें उनके मूल्य पहचानने का अभ्यास कराया। बच्चों को वास्तविक व प्रतिकृति नोट दिखाए गए, जिससे वे आसानी से संख्याओं और मूल्यों को पहचान सकें। बच्चों नें खरीदने–बेचने का छोटा–सी रोल–प्ले भी किया, जिसे उन्होंने पूरे उत्साह के साथ प्रस्तुत किया।

''बचपन में सीखी हर बात जीवन की नींव को मजबूत बनाती हैं।

**''पैसा हमारी जरूरतों को पूरा करने का माध्यम हैं।
पैसों की बर्बादी नहीं करनी चाहिए।
छोटी–छोटी बचत भी भविष्य में बड़ी मदद बन सकती है।''**

प्रोमिनेंस वर्ल्ड स्कूल में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा रोचक और शिक्षाप्रद गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इसी क्रम में एल.के.जी. टयूलिप्स कक्षा में 26 अगस्त 2025 को ''पैसे की कहानी, बच्चों की जुबानी'' नामक एक आकर्षक और ज्ञानवर्धक गतिविधि आयोजित की गई।

गुल्लक की आदत बच्चों को जिमेदारी सिखाती है।
''पैसा'' हमारे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह सिर्फ एक सिक्का या नोट नहीं, बल्कि हमारे सपनों को पूरा करने का माध्यम भी है। एल.के.जी टयूलिप्स के नन्हें–मुन्ने बच्चों के लिए एक बेहद रोचक गतिविधि ''पैसे की कहानी, बच्चों की जुबानी'' आयोजित की गई। इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों को पैसों की अहमियत, उनके सही उपयोग और बचत के महत्व को सरल और मनोरंजन तरीके से समझाना था।

गतिविधि का उद्देश्य :

इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य बच्चों को यह सिखाना था कि
''पैसा कहां से आता है।
इसे सही तरीके से खर्च कैसे किया जाता है।
गुल्लक में पैसे बचाने की आदत कैसे डाली जाती है।
और सबसे महत्वपूर्ण –पैसे की सही कीमत और मेहनत की अहमियत।''
पैसा मेहनत से कमाओ और समझदारी से खर्च करो।''

बच्चों की नन्हीं सोच में यह एक बहुत बड़ा पाठ था, जो उनकी समझ को मजबूत बनाने का एक छोटा लेकिन संदुर प्रयास है।

Edited By: Ms. Jha
Matter Compiled By: Ms. Jha
All right reserve for Prominence World School
Design At: First Page Graphic, Agra
Design For: Prominence World School
Plot No.62-B, Knowledge Park-05, Greater Noida (West)